International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

हिन्दी साहित्य में गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Parmila
Research Scholar,Deptt. of Hindi, NIILM University
Email : rakeshmadhur79@gmail.com

भारतवर्ष में गीत और गायन का प्रचलन आदिकाल से हो रहा है। सामवेद में गीत के महत्व को सुन्दर रूप में प्रतिपादित किया गया है। भारतवर्ष संस्कृति और संस्कार के लिए जग प्रसिद्ध है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि गीतों में संस्कार की भावधारा की पूरी संभावना होती है। संस्कार में जीवन का दिव्य रूप और उसकी सफलता उभरती हैं इसलिए गीता का महत्व भी स्वतः स्पष्ट होता है।

गीत : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप :–

गीत की लयात्मका, गेयता और भाव–प्रवणता उसके महत्व को सहज–रूप में गीतकार, पाठक और श्रोता पर प्रकट कर देती है। गीत गायन का ऐसा प्रकार है जिसका मूल सहृदय को आह्वादित कर देने वाला स्वर समूह होता है। आचार्य अभयदेव ने समवायगं सूत्र की टीका में गान के विज्ञान को या गान्धर्व कला को गीत कहा है। जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति को टीका में गान के विज्ञानको गान्धर्व कला को गीत कहा है। जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति को टीका में आचार्य मलयगिरि ने 'पद स्वर तालवधानात्मक गान्धर्व' को गीत माना है।[1] गीत शब्द में 'सम' उपसर्ग के मेल से संगीत बनता है, जिसमें 'गीत' का अर्थ मौखिक गान और 'सम' का अर्थ विशेष या अच्छा होता है। इस प्रकार संगीत का अर्थ सम्यक् प्रकार से लय, ताल और स्वर आदि के नियमों के अनुसार पद्य का गान होता है।[2] शाङ्र्गदेव ने संगीत को परिभाषित करते हुए लिखा है कि गीत, वाद्य और नृत्य इन तीनों के समान्वित रूप को संगीत कहते हैं।[3] इस प्रकार गीत संगीत की ही एक विशेष प्रकार प्रस्तुति है।

गीत प्राचीन काल से मनुष्य का चिरसंगी साथी है, जो उसे संकुचित दायरों से निकाल विस्तृत मनभावन परिवेश की यात्रा करवाता है। प्रो0 कुन्दनलाल ने गीत के विषय में लिखा है, ''गीत मानसिक उथल–पुथल की वह चरम सीमा है जहां व्यक्ति समष्टि लिये और समष्टि व्यक्ति के लिए है। दुख में गीतों का विकास होता है। प्रायः देखा गया है कि अर्न्तजगत की ग्रंथियां दुख में अपने आप ही खुल जाया करती हैं। उलझा हुआ इतिहास सुलझाव की ओर बढ़ता है। वेदना में, अभाव में एक आकर्षण हो जाता है और गीत की पूर्णता उसी क्षण पर होती है जब मन आत्मा से अपन्त्व पूछता है।[4] निश्चय ही मन की गहराइयों को दूर कर उसे उत्कर्ष प्रदान करने में सफल होती है।

श्री गुलाब राय ने गीत के जन्म को दुख को विशद परिसीमा में बाँधते हुए लिखा है कि ''दूख ही में गीत की उत्पत्ति है। यदि संसार सर्वसुखी होता है तो कवियों की उत्पत्ति शायद ही होती है। अपूर्णता, अभाव, वेदना और कविता शायद एक ही भाव की भिन्न स्थितियाँ हैं। वेदना जनित ये गीत भी इतने आनन्दमयी कैसे होते हैं, इसी रहस्य में कविता का सौन्दर्य छिपा है।''[5] उदय शंकर भट्ट ने अपने एक नाटक में संगीत, चित्त और काव्य को समान्वित रूप में लेते हुए उन्हें मनुष्य और प्रकृति के सहयोग से निर्मित ऐसी अनुपम रचना माना जिसमें मनुष्य अपने सारे दुख, विषाद भूलकर आनन्द का भागीदार बनता है। उनके अनुसार, ''संगीत चित्त और काव्य मनुष्य और प्रकृति को सुषमा की किरणें हैं। जिसमें मनुष्य का विषाद खो जाता है।''[6] गीतकार, गीतश्रोता का हृदय नये भावों, स्वप्नों और कल्पनाओं के सागर में हिलौरे

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

लेने लगता है। निराश और उदासीनता के स्थान पर आशा और उल्लास का संचार होता है। इससे मनुष्य के भावों में उत्कर्ष होना स्वाभाविक है।

गंभीर चिन्तन करें तो मानव मन का गहन मनोरम उच्छवास है। उसकी भव्य भावनाओं की सहज, सरल और मधुमय अभिव्यक्ति है। गीत जीवन का वह कामनीय अंग है जिसके अभाव में संपूर्ण जीवन ही नीरस है। सृष्टि में प्रकृति सौन्दर्य की भांति गीत मनुष्य जगत का सौन्दर्य है। ''जिस प्रकार प्रकृति ने अपने से मातृभूमि के शरीर को चतुरस्त्रशोभी बनाया था उसी प्रकार मनुष्य ने भी चारों खूंटों में छाये हुए अपने जीवन को नृत्य और संगीत के आनन्द से सींच दिया।''[7] संगीत संसार की व्याधियों, झंझटों से मुक्ति के लिए भाग्य की विडम्बना से लड़ने के लिए अचूक औषधि बन गया। गीत की तन्मयता में, उसकी काल्पनिक सुधा माधुरी में, लय के उतार–चढ़ाव में मनुष्य का सारा राग–द्वेष, दुख–दैन्य, सफलता–विफलता बह गई। यथार्थ की कठोर भूमि पर कल्पना का मुलायम आवरण पड़ गया। निश्चय ही दुख, दर्द अपनी कसक खोकर मधुमय हो जाता है। गीत की स्वर लहरी में वह अलौकिक आह्वान मिलता है, जिसने सुख को सुखातिरेक और दुख को आनन्द भाव में रूपान्तिरित कर देता है। के0 वासुदेव शास्त्री ने संगीत की सुख और आनन्द का परम आधार बताते हुए लिखा है, ''संगीत आनन्द अविर्भाव है। आनन्द ईश्वर का स्वरूप है। संगीत के द्वारा दुख के लेश तक से भी संबंध न रखने वाला सुख मिलता है। दूसरे विषयों से होने वाले सुखों के आगे या पीछे दुख की संभावना है परन्तु इस दुख पूर्ण संसार में संगीत एक स्वर्गवास हैं संगीत के ईश्वर का स्वरूप होने के कारण जो लागे संगीत का अभ्यास करते हैं, वे तप, दान, यज्ञ, कर्म, योग आदि के कष्ट न झेलते हुए मोक्ष मार्ग तक पहुंचते हैं।''[8] संगीत की यही अलौकिक शक्ति इतनी प्रभावशाली है कि मनुष्य तो मनुष्य पशु–पक्षी भी जिनके पास मनुष्य जैसी विचारशीलता का अभाव है, संगीत के वशीभूत हो मस्त हो उठते हैं। उसकी लय और तान पर नाचने लगते हैं।

वास्तव में संगीत प्रकृति के कण–कण में व्याप्त है। सृष्टि का कोई तत्व संगीत विहीन नहीं है। नदियों की कल–कल में, भंवरों के गुंजार में, पत्तों की टकराहट में, पवन की सांय–सांय में, लहरों की थाप में, पक्षियों के कलरव में, सभी जगह गीत–संगीत के स्वर सुनाई पड़ते हैं। संगीत की इसी व्यापकता और प्रभावशीलता के आधार पर कहा जा सकता है कि संगीत केवल एक साधन या साध्य न होकर दोनों हैं। वह मानव के लिए परम आनन्ददायक आधार है।

पाश्चात्य विद्वान शेक्सपीयर ने संगीत को मनुष्यता का मापदण्ड स्वीकार करते हुए लिखा है कि जो मनुष्य संगीत नहीं जानता और जो उसके मीठे स्वरों पर मुग्ध नहीं होता वह पतित है, विश्वासघाती है। उसकी आत्मा गहरी अंधकारयुक्त राज से भी अधिक काली है। वह अविश्वसनीय है।''[9] भर्तहरि ने अपने नीतिशतक में इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए साहित्य, संगीत, कलाविहीन व्यक्ति को पशु की संज्ञा दी है, ''साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः।''[10]

''गीत मानव हृदय का राग है, जो कि आम्मानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए प्रेरणा देता है।''[11] व्यक्ति के अंतर्मन की भावभीनी अभिव्यक्ति है। उसे भावों इच्छाओं परिस्थितियों तथा परिणामों का सूक्ष्म लेखा–जोखा है। गीत समाज, देश, राष्ट्र की संस्कृति के विविध पक्षों का दर्पण है।

गीत उद्भव कब और कैसे हुआ? यह प्रश्न अत्यन्त जटिल है। अतः स्वीकार करना होगा कि इस प्रश्न के विषय में ठोस रूप से कुछ भी कहना संभव नहीं। हाँ इतना आवश्यक है कि गीत की यात्रा बहुत लंबी है। तथा यह मानव इतिहास के आदिम युग से जुड़ती है। इस विषय में डॉ. शान्ति मलिक ने लिखा

है, ''सामूहिक गान और नृतय सभ्यता के आदिम युग से प्रचलित हैं कृषक हृदय के उल्लास को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले यही नृत्य एवं गान हैं।''[12]

वस्तुतः जब भी किसी आँगन में बच्चे की किलकारियाँ गूंजी होंगी, किसी माँ ने अपने नन्हें को सुलाने के लिए हल्की–हल्की थाप दी होगी, किसी प्रेमी के कण्ठ से अपनी प्रेम यात्रा के लिए आह्वाद या रूदन गूंजा होगा, किसी करूणा विचलित हृदय की वाणी प्रस्फूटित हुई होगी, तब गीत के स्वर फूट पड़े होंगे। सृष्टि एक मनोरम हलचल से भर गई होगी। जीवन में एक नया अध्याय उसी समय जुड़ गया होगा।

अतः गीत–संगीत मानव जीवन का चिरंसगी रहा है। जिस प्रकार जीवन के उद्भव की कोई निश्चित तिथि निर्धारित नहीं की जा सकती उसी प्रकार गीत के उद्भव की भी कोई तिथि निर्धारित नहीं की जा सकती। मानव की प्रत्येक क्रिया में गीत का आन्तरिक प्रवाह रहा है। गीत का उद्भव मनुष्य की दिमागी हलचलों से न होकर उसके साँसों की उठती गिरती तरंगों से हुआ है। गीत हृदय के भावों के उत्पन्न होकर मन–मस्तिष्क को गतिशील रहने की ऊर्जा और शक्ति देता है।

सन्दर्भ–सूची :–

1. डॉ0 अमिता शर्मा, शास्त्रीय संगीत का विकास, पृ.0 102
2. वासुदेव शास्त्री, संगीत शास्त्र, प्0 1
3. 'गीत' बाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत, संगीत रत्नाकर (1–21)
4. प्रे0 कुन्दन लाल, नाटककार प्रसाद और उनका चन्द्रगुप्त, पृ0 141
5. गुलाबराय, प्रसाद जी की कला, पृ0 138
6. उदयशंकर भट्ट, दाहर अथवा सिंध पतन, पृ0 31
7. नगेन्द्र, भारतीय नाट्य साहित्य, पृ0 57
8. के0 वासुदेव शास्त्री, संगीत शास्त्र, पृ0 1
9. देवेन्द्र मुनि शास्त्री, साहित्य और संस्कृति, पृ0 162
10. भर्तृहरि, नीतिशतक, पृ0 67
11. सवित्री शुक्ल, साहित्य–संदेश,, (आजात शत्रु के गीत– नाटककार सेठ गोविन्दराय)
12. डॉ0 शान्ति मलिक, नाट्य सिद्धांत विवेचन, पृ0 10